डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग

विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय, राजनगर, मधुबनी

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

कविता - द्रुत झरो की मूल संवेदना

सुमित्रा नंदन पंत की रचनाओं का क्रमिक विकास 'वीणा' से देखा जा सकता है। इस संग्रह में उनकी 1918 – 19 के आसपास लिखी गई कविताओं का संकलन है। 'ग्रंथि' में कवि ने वेदना का विश्वव्यापी रूप अत्यंत विशदता से चित्रित किया है। 'ग्रंथि' में कवि ने असफल प्रणय कथा को पद्यबद्ध किया है, यह अतुकांत छंद में लिखा गया है। 'पल्लव' को हिंदी काव्यजगत की युगान्तरकारी रचना माना जाता है। डॉ. रामविलास शर्मा, आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, शांतिप्रिय द्विवेदी, इलाचन्द्र जोशी, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी तथा डॉ. नगेन्द्र आदि विद्वानों ने 'पल्लव' की प्रशंसा की है। 'गुँजन' की कविताओं में कवि हृदय से ऊपर उठकर आत्मा की ओर बढ़ता हुआ प्रतीत होता है। 'ज्योत्सना' कवि पंत द्वारा लिखित काव्य – रूपक है, इसमें अमूर्त भाव को मूर्त – रूप प्रदान किया गया है। 'वीणा' से लेकर 'ज्योत्सना' तक कवि के विकास का प्रथम चरण देखा जा सकता है। 'युगांत' का समाजवाद गांधीवादी आधारशिला पर प्रतिष्ठित है। 'युगांत' को छायावादी सौन्दर्यप्रियता के अवसान का घोषणा – पत्र माना गया है। डॉ. नगेन्द्र ने कहा है "पल्लव का करुणाक्लिष्ट भाव जो 'गुँजन' में आकर समझौते का रूप धारण कर चुका था, 'युगांत' में आकर पूर्णतया मांगलिक कामनाओं का वाहक हो गया है।"

'युगांत' की कविताओं में कवि की दृष्टि आस्थामय हो जाती है। पंत की जो काव्ययात्रा प्रार्थना, प्रकृति और प्रेम से आरंभ होती है और आगे चलकर समाज के विशद पथ पर चलती है। 'द्रुत झरो' पंत की 1934 की रचना है, इस समय तक आते आते उनका चिंतन, दृष्टिकोण और काव्य – सृजन सामाजिक साम्य की दिशा में अपना लक्ष्य निर्धारित कर लेता है। उनके काव्य – सृजन के इस दौर की कविताएं 'युगांत' में संकलित की गई हैं। कवि परिवर्तन का आह्वान करते हैं। पुरानी जर्जर मान्यताओं और रूढ़ियों का विरोध करते हैं। एक ऐसे समाज के निर्माण के लिए प्रतिबद्ध होते हैं जहां सभी एक समान हों। जहाँ किसी प्रकार का वैषम्य, शोषण और उत्पीड़न न हो। 'युगांत' की रचनाओं के संबंध में डॉ. नगेन्द्र का मानना है कि 'युगांत' में आकर कवि पंत ने सौंदर्य युग का अंत कर दिया है। वास्तव में प्रकृति प्रेम में डूबा कवि युगांत में प्राचीन रूढ़ियों के परित्याग के लिए प्रतिबद्ध दिखाई देता है। द्रुत झरो कविता में कवि पुरानी सामाजिक व्यवस्था को समाप्त कर नई व्यवस्था का स्वागत करना चाहता है। पुराने पत्ते के प्रतीक के माध्यम से पुरानी व्यवस्था को झर जाने अर्थात समाप्त हो जाने को कहते हैं। जड़ता को समाप्त हो जाने का संकेत करते हैं। जड़ता न स्वयं परिवर्तित होती है न व्यवस्था को परिवर्तित होने देती है अतः उसका समाप्त हो जाना ही सही है। नए के स्वागत के लिए पुराने का समाप्त हो जाना ही उचित है। युग परिवर्तन की आँधी में पुरानी जर्जर मान्यताओं का उड़ जाना ही श्रेयस्कर है। कवि पक्षी और पत्ते के प्रतीक के माध्यम से प्राचीन युग को विगत युग कहा है। कवि क्रांति के स्वागत के लिए तैयार है। क्रांति से आमूल – चूल परिवर्तन होगा जिसके

फलस्वरूप नए समाज का निर्माण होगा। इस नए समाज में छोटे – बड़े का भेद नहीं होगा, सभी समान होंगे और प्रसन्न रहेंगे। वेदना की आह नहीं होगी यौवन और प्रेम के गीत होंगे। सर्वत्र उत्साह और उमंग का वातावरण होगा। पुराने पत्ते के झड़ने और नए पत्ते के आगमन के प्रतीक द्वारा कवि नवीन सामाजिक व्यवस्था का स्वागत करते हैं।

पुरानी व्यवस्था पुराने पत्ते की तरह सर्दी और धूप के प्रभाव को सहती हुई पीली पड़ गई है। वह अपना प्राणतत्व खो चुकी है, स्वास्थ्य के सुंदर रक्तिम लाली से विहीन हो चुकी है। अपनी प्राचीनता पर व्यर्थ अभिमान करके उसने अपनी गति को अवरुद्ध कर लिया है। जब यह आगे नहीं बढ़ सकती तो इसका समाप्त हो जाना ही ठीक है। जब स्वयं आगे बढ़ने में सक्षम नहीं है तो ऐसे में स्वयं समाप्त होकर नई व्यवस्था का स्वागत करे।

कवि पंत गाँधी और मार्क्स के दर्शनों से प्रभावित हैं। साम्राज्यवाद के विरुद्ध समाजवाद में आस्था रखते हैं। एक वर्गविहीन समाज के स्वागत के लिए तैयार हैं।